अशोधित प्रति/ प्रकाशनार्थ नहीं

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृतान्त

अंक: 1 तेरहवीं विधान सभा के पहले सत्र का दूसरा दिवस संख्या: 2

शुक्रवार,
2 जनवरी, 2009

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे
विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री देवीसिंह भाटी, अस्थाई अध्यक्ष पदासीन)

शपथ ग्रहण
नव निर्वाचित माननीय सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

श्री अध्यक्ष: नमस्कार, नमस्कार। सचिव महोदय, जिन माननीय सदस्यों ने कल शपथ ग्रहण नहीं की है कृपया उपस्थित हो तो शपथ के लिए पधारे। श्री ओम बिरला।

(निम्नांकित माननीय सदस्यों ने
उनके नाम के सम्मुख अंकित भाषा में शपथ ग्रहण की)

39. श्री ओम बिरला (कोटा दक्षिण):	शपथ	हिन्दी
58. श्री गंगाजल (सूरतगढ़):	शपथ	हिन्दी

श्री अध्यक्ष: विराजें, माननीय सदस्य विराजें।

अध्यक्ष का निर्वाचन
दीपेन्द्र सिंह श्री का अध्यक्ष पद पर निर्वाचन

श्री अशोक गहलोत सदस्य, विधान सभा निम्नांकित प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे कि श्री दीपेन्द्र सिंह सदस्य, विधान सभा को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।

श्री अशोक गहलोत (मुख्य मंत्री): मैं प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं कि श्री दीपेन्द्र सिंह सदस्य विधान सभा, विभाजन संख्या 73 को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए ।

श्री अध्यक्ष: श्रीमती वसुन्धरा राजे, सदस्य विधान सभा उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करेगी।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (नेता,प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, मैं उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करती हूं।

श्री अध्यक्ष: प्रश्न यह है कि जो प्रस्ताव श्री अशोक गहलोत,सदस्य विधान सभा ने प्रस्तुत किया है तथा जिसका अनुमोदन श्रीमती वसुन्धरा राजे, सदस्य विधान सभा ने किया है को स्वीकार किया जाए?

(स्वीकृत)

प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

श्री दीपेन्द्र सिंह, सदस्य विधान सभा सर्व सम्मति से राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

(श्री अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री व श्रीमती वसुन्धरा राजे, नेता प्रतिपक्ष व अन्य माननीय सदस्य नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत को माननीय अध्यक्ष के आसन तक ले गए।)

(समय:)

(श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत, अध्यक्ष पदासीन)

बधाई एवं आभार

दीपेन्द्र सिंह श्री के अध्यक्ष निर्वाचित होने पर बधाई

श्री अशोक गहलोत (मुख्य मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं आपको अध्यक्ष निर्वाचित होने पर अपनी ओर से अपने दल की ओर से, तमाम सदस्यों की ओर से हार्दिक बधाई पेश करता हूं।

जैसा कि इस सदन की परम्परा रही है, हमेशा से अध्यक्ष का पद सर्वसम्मति से निर्वाचित होता आया है और मुझे खुशी है कि इस बार भी आप सबकी सहमति से अध्यक्ष बने, उसके लिए आप विशेष मुबारकबाद के पात्र है। मैं उम्मीद करता हूं कि आपका अपने जीवन का लंबा अनुभव है, पन्द्रह साल तक आप इस सदन के सदस्य रहे हैं। आपने देखा है, इस पद की गरिमा को देखा है। इस पद पर बैठने वाले का पद

गरिमामय भी होता है , गौरवशाली परम्परा का निर्वहन करने वाला भी होता है और साथ साथ में कांटो के ताज के रूप भी में होता है। मुझे पूरा यकीन है कि आपके व्यक्तित्व से आपके बुद्धिकौशल से, आपके प्रभावित करने के संकल्प से----

दुर्गा/चौहान 02012009 1110 1b

आप सब साथियों की जो अपनी-अपनी भावनाएं होंगी उनको आप सुन करके निष्पक्षता से फैसला करेंगे, जिससे कि सदन के तमाम साथियों को एक आह्वान होगा, एक संकल्प होगा कि हमारी बात को सुना जा रहा है। क्योंकि मैं जानता हूं कि सबकी भावनाएं सुनना और फिर फैसला करना, बड़ा कठिन भी होता है। सब आपसे उम्मीद करेंगे कि आप हमारी रक्षा करें, हमें प्रोटेक्शन दें और उसके बाद में आपको फैसला करना है। मुझे विश्वास है कि आपके फैसले हम सबको मान्य होंगे। हम कार्य संचालन में आपको पूरा सहयोग करेंगे। पूरा सदन आपके फैसलों को मानेगा। मैं अपनी ओर से, सदन की ओर से यह आपको विश्वास देता हूं और पुन: मैं आपको यह कहना चाहूंगा कि इस सदन में निर्दलीय विधायक भी जीतकर आये हैं, वे किसी दल से सम्बंधित नहीं हैं। उनकी रक्षा करने का भार भी आपके ऊपर है। और मैं उम्मीद करता हूं कि आपके फैसलों से हम सब प्रभावित होंगे और मैं अपनी ओर से और सदन के तमाम सदस्यों की ओर से एक बार पुन: विश्वास दिलाता हूं कि पूरा सदन आपके फैसलों को मान्य करेगा, मानेगा और आपके कार्य-संचालन के काम को हम लोग पूरी तरह से अपनाएंगे और प्रोटेक्शन में रहेंगे, धन्यवाद।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (नेता,प्रतिपक्ष): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपको विधान सभा के गरिमामय पद, अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से चुने जाने पर मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देना चाहती हूं। महोदय, यह सदन एक बहुत ही पवित्र मन्दिर है और यह बहुत महत्वपूर्ण पद भी है। इसमें न्याय, गरिमा और संरक्षण जैसा एक ताज है जिसको आज आपको पहनना पडा है। मैं समझती हूं कि हम सबके हितों की रक्षा करने का काम अब आपके हाथों में है और इतना तो एक्सपीरियंस आपका, पक्ष में बैठने का भी, विपक्ष में बैठने का भी है। अच्छा अनुभव और खुद योग्य होने के नाते, मैं समझती हूं कि आप हमारे हितों की रक्षा करने में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। यह लोकतंत्र का एक रथ और आप उसके सारथी हैं। दोनों पहियों में संतुलन रखने का काम अब आपको करने की जरुरत है और मैं मानती हूं कि आप इसको बड़ी गरिमा से, हम सबकी बातों को ध्यान में रखते हुए इसको करने की कोशिश करेंगे। हालांकि आप उस पार्टी से चुनकर आये हैं जो सत्ता पक्ष है परन्तु इस सदन के अन्दर हम सबकी अपेक्षाएं हैं, वह

आपकी पूरी-पूरी जिम्मेदारी है, चाहे वह पक्ष हो, चाहे विपक्ष हो और चाहे निर्दलीय हमारे जो भाई बैठे हैं, वो हों। मैं समझती हूं हमने हमारे सब अधिकार आज आपको सौंपें हैं और वह आप जनता के अधिकार को अपना मानकर हम सबके हितों की रक्षा करेंगे। अब्राहिम लिंकन ने यह कहा था “This Government is of the people, by the people and for the people.” और इसीलिये यह सब अब आपके पास में है। आप इनको सम्भालेंगे और जो हमारी पुरानी परम्परा है, वह परम्परा भारत की लोकसभा की और राजस्थान विधान सभा की जो एक बहुत बड़ी परम्परा है, इसको हम अपने ध्यान में रखेंगे। मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहती हूं कि मर्यादाओं का हम लोग सब बैठकर जो हाउस में बैठे हैं, सब पालन करेंगे। विपक्ष की ओर से भी मैं यह विश्‍वास दिलाना चाहती हूं कि सदन की गरिमा को हम हमेशा ध्यान में रखेंगे और आपको पूरी तरह से हमारी ओर से जो भी मदद हो सकती है, उसमें कमी हम नहीं छोड़ेंगे। आपको फिर से मैं बधाई देना चाहती हूं, आज के इस दिन हम सबकी ओर से बहुत-बहुत बधाई।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, हम भी दे दें, बधाई, आपको। माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर मैं मेरी ओर से, और मेरे दल के माननीय सदस्यों की ओर से आपको बधाई देते हैं और मैं समझता हूं कि आपका बहुत बड़ा अनुभव हमारे साथ में विपक्ष में और सत्तापक्ष में रह करके, जो सेवा करने का रहा है, यह राजस्थान विधान सभा का सदन, और यह राजस्थान का सर्वोच्च सदन है, की जो परम्पराएं रही हैं, और जो न केवल हमारे राजस्थान में बल्कि पूरे देश में इस सदन से जो निकलकर गये हैं, उन्होंने जो परम्पराएं स्थापित की हैं, और उसी के अनुसार आज जो सर्वसम्मति से आपका जो चुनाव हुआ है, मैं समझता हूं कि उन परम्पराओं को आप आगे बढ़ाएंगे और हम सम्पूर्ण रूप से आपको इस सदन को चलाने में पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेंगे। इसलिये मैं आपको पुन: इस बात के लिये कि प्रतिपक्ष में बैठे हुए माननीय सदस्य, चूंकि सत्ता पक्ष के पास शासन चलाने का अधिकार जो जनता ने निर्दलीयों के माध्यम से दिया है, निश्चित रूप से उसको चलाएंगे, लेकिन प्रतिपक्ष में हमारे पास उस राजस्थान की जनता की आवाज रखने का मौका निश्चित रूप से आप देंगे। मैं पुन: मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से आपका आभार व्यक्त करता हुआ पुन: सर्वसम्मति से चुनने पर बधाई देता हुआ मेरी बात समाप्त करता हूं, जय हिन्द।

श्री अध्यक्ष: और कोई माननीय सदस्य अगर...।

श्री फतेह सिंह (कुशलगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, आज राजस्थान विधान सभा में सर्वसम्मति से अध्यक्ष का चुनाव हुआ जिसमें आपको अध्यक्ष के पद में चुना गया है, सर्वसम्मति से यह पद दिया गया है, उस दृष्टि से मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देना

चाहूंगा और उम्मीद करुंगा कि राजस्थान विधान सभा में पक्ष और विपक्ष दोनों हैं लेकिन साथ-साथ में अन्य दल भी हैं। मैं आपसे उम्मीद करुंगा कि अन्य दलों को भी साथ में लेकर चलें, हमारी भावनाओं को आप देखें, सोचें, समझें और हमको भी सहयोग देवें। मैं उम्मीद करुंगा कि अब हम सबके एक संरक्षक के रूप में काम करेंगे और हमें मौका देंगे और हमारी भावनाओं की कद्र करेंगे। पुनः आपने जो पद ग्रहण किया, उसके लिये मैं आपको बधाई देते हुए, मैं अपनी बात को समाप्त करुंगा, जय भारत।

श्री मुरारीलाल मीणा (दौसा): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर बहुजन समाज पार्टी की ओर से आपको बहुत-बहुत बधाई। आपसे मेरा निवेदन है कि जहां पिछली बार हमने देखा है कि सत्ता पक्ष वाले विपक्ष का और विपक्ष वाले सत्ता पक्ष का ज्यादा ध्यान रखते है। इस बार हमको आपसे पूरी उम्मीद है कि आप बीच वालों का ध्यान रखेंगे, धन्यवाद।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वसम्मति से चुने जाने पर बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देता हूं, शंकर सिंह रावत, ब्यावर।

श्री सूरजभान (राजगढ़-लक्ष्मणगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं समाजवादी पार्टी से सूरजभान धानका अकेला सदस्य हूं, मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से बहुत-बहुत बधाइयां देता हूं, जो आप सर्वमान्य नीति से...।

श्री मुरारीलाल मीणा (दौसा): वैसे भी साहब, ये तो गलत जाति प्रमाण-पत्र बना करके यहां आ गये विधान सभा में।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, प्लीज, प्लीज, प्लीज, माननीय सदस्य।

श्री मुरारीलाल मीणा (दौसा): एस.टी. में आते ही नहीं है, फिर भी फर्जी तरीके से...।

श्री अध्यक्ष: प्लीज, माननीय सदस्य।

श्री सूरजभान (राजगढ़-लक्ष्मणगढ़): माननीय, अगर यह गलत है तो कोर्ट पडा है।

श्री अध्यक्ष: आप तो अपनी बात कहें।

श्री मुरारीलाल मीणा (दौसा): एस.सी. का बना हुआ है, टी.सी. भी एस.सी. की बनी हुई है, इनका खुद का जाति प्रमाण-पत्र एस.सी. का है। मैं आपको दिखा सकता हूं।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, बीच में डिस्टर्ब नहीं करें, कृपया। माननीय सदस्य, प्लीज, प्लीज, बैठिये आप।

श्री सूरजभान (राजगढ़-लक्ष्मणगढ़): मेरी तरफ से बधाई ओर बहुत-बहुत धन्यवाद। सत्ता पक्ष और विपक्ष के साथ हमारे दल का भी आप विशेष ध्यान रखेंगे। धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष: माननीय किरोड़ीलालजी।

श्री किरोड़ीलाल (टोडाभीम): अध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में सर्वसम्मति से आपका चुनाव हुआ। मैं दोनों सत्ताओं के बीच में हूं। इसके लिये मैं आपको बहुत-बहुत

धन्यवाद देना चाहता हूं। इधर छ्हांङ है और उधर छ्नाङ है और हम दोनों छ्हां और छ्नाङ के बीच में हैं।

श्री अध्यक्ष: गोलमा देवीजी कहां हैं।

श्री किरोड़ीलाल (टोडाभीम): वे हां के साथ हैं। वे हां के साथ में हैं और हम हां और ना के बीच में जब ज्यादा द्वंद्व होगा तो हम आपके मार्गनिर्देशन में उसका अच्छा रास्ता निकालेंगे और पूरी जिम्मेदारी का, मर्यादा का, गरिमा का जो आप निर्वहन कराएंगे, वैसे सदन में आपका हमको आशीर्वाद रहेगा, सहयोग रहेगा।

Vps-usc-02.01.2009-11.20-1c

ताकि सदन प्रदेश की जनता के विकास के हित में, चहुंमुखी विकास हो और जिस इरादे के साथ यहां सदन के सभी सदस्य बैठे हैं, उस इरादे के साथ हम आपके सहयोग से आगे प्रदेश को बढ़ा सकें। इतना ही मैं इस मौके पर आपको धन्यवाद और आभार प्रदर्शन करना चाहता हूं।

दीपेन्द्र सिंह श्री, अध्यक्ष द्वारा आभार प्रदर्शन

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, तेरहवीं राजस्थान विधान सभा में जन-प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित होकर आये आप सभी का इस सदन में हार्दिक अभिनन्दन है। सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों ने ही सर्वसम्मति से अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित कर मुझे जो गुरुत्तर-दायित्व सौंपा है उसके लिए मैं आप सभी का आभारी हूं। सदन के नेता और विशेष रूप से प्रतिपक्ष के नेता का बहुत आभारी हूं कि जिन्होंने इस सदन की सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित करने की स्वस्थ परम्परा को बनाये रखने के लिए सहयोग दिया है। मैं राजस्थान की जनता का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए सदन के समस्त माननीय सदस्यों को भी मैं अपनी ओर से भी बधाई और नव वर्ष की शुभकामनाएं देता हूं। सभी पक्षों के माननीय सदस्यों ने मेरे बारे में जो सद्भावनापूर्ण विचार व्यक्त किये हैं उससे मैं अपने आपको अभिभूत महसूस कर रहा हूं।

माननीय सदस्यगण, आज मैं 04 जुलाई, 1980 को याद किये बना नहीं रह सकता जब मैं पहली बार इस सदन में एक नव-निर्वाचित विधायक के रूप में चुनकर आया था। उस समय अपने आपको बड़े-बड़े दिग्गज नेताओं के बीच पाकर मुझे गर्व का अनुभव हो रहा था। उनमें से कई नेतागण तो आज भी सदन की शोभा बढ़ा रहे हैं। मैंने अपने विधान सभा के करीब 15 वर्ष के कार्यकाल में श्री पूनमचन्दजी विश्नोई, श्री हरिशंकरजी भाभड़ा, श्री शांतिलालजी चपलोत और श्री परसरामजी मदेरणा को अध्यक्ष के इस सर्वोच्च पद को सुशोभित करते हुए देखा है। इनके द्वारा स्थापित स्वस्थ संसदीय परम्पराएं पथ-

प्रदर्शन करने वाली हैं। इस गौरवशाली सदन के आसन पर आसीन रहे पूर्व सम्माननीय अध्यक्षों ने इसकी गरिमा और प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखते हुए सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष के मध्य सामंजस्य, संतुलन और सद्भावना स्थापित करने का जो कर्तव्य निर्वहन किया गया है वह मेरे लिए अनुकरणीय और प्रेरणादायी होगा।

माननीय सदस्यगण, सरकारों का परिवर्तन लोकतंत्र की एक सहज प्रक्रिया है और इसे सहज रूप में ही लिया जाना चाहिए। हमारा यह सदन पाँच करोड़ से अधिक लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह सदन समाज के विभिन्न वर्गों के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों, विचारधाराओं और हितों का प्रतिनिधित्व करता है। विविधता की यह विशेषता ही इस सदन की ताकत होगी और यह अपेक्षा की जायेगी कि विभिन्न आर्थिक, सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जाए।

तेरहवीं राजस्थान विधान सभा को एक नई शुरूआत करने के लिए जनादेश प्राप्त हुआ है और इस सदन को एक विशेष जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस सदन की अपनी एक विशिष्ट गरिमा रही है। मैं आप सभी से अपेक्षा करता हूं कि इस गरिमा को कायम रखने में आप सभी का पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। आसन का पूरा प्रयास रहेगा कि आपके सहयोग से सदन नियमानुसार ठीक तरीके से चले। सत्तापक्ष द्वारा लाया गया विधायी कार्य निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुसार ठीक तरीके से सम्पन्न हो सके और प्रतिपक्ष को भी अपनी बात कहने का पूरा अवसर मिले। मेरा यह भी प्रयास रहेगा कि इस गरिमामय आसन की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने के लिए सदन की कार्यवाही के संचालन में पूर्ण निष्पक्षता से कार्य किया जाये।

माननीय सदस्यगण, यह सदन नियमों, प्रक्रियाओं, व्यवस्थाओं और परम्पराओं के आधार पर चलता है और यह आसन भी उससे बंधा हुआ है इसलिए व्यवस्था बनाये रखने तथा नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए मुझे आपके सहयोग की आवश्यकता होगी। सदन के प्रभावी कार्य निष्पादन के लिए विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमावली है। इस तेरहवीं विधान सभा में करीब 108 सदस्य प्रथम बार चुनकर आये हैं, इतनी बड़ी संख्या में नये सदस्यों का निर्वाचित होकर आना इस विधान सभा के इतिहास में पहली बार हुआ है। इन सभी युवा माननीय सदस्यों से मेरा अनुरोध है कि वे दलीय विचारधारा से ऊपर उठकर इस सदन में पूर्व में भी विधायक रहे अनुभवी माननीय सदस्यों से सदन की कार्य-प्रणाली और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करें। साथ ही सदन के कार्य-संचालन से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों और विधान सभा के कार्य-संचालन संबंधी नियमों का गहनता से अध्ययन करने की कृपा करें ताकि वे प्रक्रिया नियमों के अन्तर्गत उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाकर अपने कर्तव्यों का प्रभावी निर्वहन कर सके। मैं आशा करता हूं कि सभी नये सदस्यगण पूरी लगन और

निष्ठा से अपने निर्वाचकों की समस्याओं को समझने और उनके समाधान में अपना महत्वपूर्ण योगदान करेंगे।

माननीय सदस्यगण, प्रदेश की जनता की निगाह में विधायक बनना एक सम्मान और प्रतिष्ठा की बात होती है। सदन का प्रभावी कार्य-संचालन इस बात पर निर्भर करता है कि यहां हम नियमों, दिशा-निर्देशों और संसदीय परम्पराओं का कितना पालन करते हैं?

माननीय सदस्यगण, अध्यक्ष के रूप में मुझे जो गुरुत्तर-दायित्व सौंपा गया है उससे मैं भली-भांति परिचित हूं और इस दायित्व को संविधान में उल्लिखित ध्येय और इस सदन के नियमों और स्वस्थ संसदीय परम्पराओं के अनुरूप निभाने का भरसक प्रयत्न करूंगा। सदन को मैं इस बात के लिए भी आश्वस्त करना चाहूंगा कि अध्यक्ष के रूप में मेरा आचरण और व्यवहार सदैव आपकी कसौटी पर रहेगा। मेरा यह भी प्रयास रहेगा कि इस सदन के पूर्ववर्ती पीठासीन अधिकारियों द्वारा स्थापित संसदीय परम्पराओं और प्रथाओं के उच्च मानदंडों को आगे बढ़ाया जा सके।

माननीय सदस्यगण, मैं इस उच्च और गरिमामय पद के दायित्वों को अधिकार नहीं अपितु कर्तव्य समझकर निभाऊंगा। संसदीय प्रणाली में अध्यक्ष को दलीय विचारधारा से ऊपर उठकर कार्य करना होता है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि सदन की कार्यवाही के संचालन में आसन द्वारा पूरी तरह दलीय विचारधारा से ऊपर उठकर कार्य किया जायेगा तथा सदन की गरिमा और इसके सम्माननीय सदस्यों के अधिकारों की रक्षा करने का प्रयास किया जायेगा।

माननीय सदस्यगण, मैं अपने प्रति दिखाये गये विश्वास और समर्थन के लिए आप सभी का हृदय से आभारी हूं और सदन के प्रभावी संचालन के लिए आपके सहयोग की अपेक्षा रखते हुए चाहता हूं कि हम संसदीय नियमों का पालन करें। राजस्थान के विकास के लिए प्रतिपक्ष जन-समस्याओं को नियमों के अन्तर्गत उठाये और सत्तापक्ष उनके समाधान की दिशा में सक्रिय सहयोग करे।

अन्त में, मैं आप सभी को यह विश्वास दिलाता हूं कि आपने जो विश्वास और आस्था मुझ में दिखाई है उस पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करूंगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका अभिवादन करता हूं, आप सबको आपकी जीत के लिए बहुत-बहुत बधाई, आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

दलीय स्थिति

-भारतीय जनता पार्टी को प्रतिपक्ष दल के रूप में मान्यता

-वसुन्धरा राजे श्रीमती, को नेता प्रतिपक्ष के रूप में मान्यता

प्रतिपक्ष दल के नेता की घोषणा। मुझे सदन को सूचित करना है कि राजस्थान विधान सभा के भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल की बैठक में इस आशय का निर्णय लिये जाने की सूचना प्राप्त हुई है कि श्रीमती वसुन्धरा राजे, विधायक को उक्त विधायक दल का नेता चुना गया है।

मुझे माननीय सदस्यों को यह भी सूचित करना है कि राजस्थान विधान सभा में भारतीय जनता पार्टी को प्रतिपक्ष दल के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गयी है तथा पार्टी की नेता श्रीमती वसुन्धरा राजे को प्रतिपक्ष दल का नेता मान लिया गया है।

सदन की बैठक शनिवार, दिनांक 03 जनवरी, 2009 के प्रात: 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 11.27 बजे शनिवार, दिनांक 03 जनवरी, 2009 के 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई)